भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

कहावतें

कहावतें मानव जाति के अनुभवों की सुन्दर अभिव्यक्ति हैं। इनसे सांसारिक व्यवहार-कुशलता एवं सामान्य बुद्धि का उत्कृष्ट निदर्शन होता है। यह ग्रामीणों, खासकर ग्रामीण स्त्रियों की निजी सम्पत्ति है। लोक साहित्य के क्षेत्र में काम कर चुके या कर रहे प्रायः सभी विद्वानों/खोजकर्त्ताओं की एकमत से राय है कि अधिकतर कहावतों का उद्‌भव स्त्रियों द्वारा हुआ है। शिक्षित के बजाय अनपढ़ स्त्रियों की वाणी में कहावतों/मुहावरों का कोश ही रहता है। वह इनका सटीक प्रयोग करना जानती हैं और करती हैं। इसीलिए तेलगू में एक कहावत है- ''शिक्षित की अपेक्षा धोबी अच्छा है न?'' बातचीत के क्रम में सटीक कहावत का प्रयोग कर सामने वाले को प्रभावित एवं निरूत्तर किया जा सकता है; यही कहावतों की प्रामाणिकता का सबसे बड़ा आधार है, यही उसकी महत्ता एवं उपयोगिता का सबसे बड़ा प्रमाण है। इन कहावतों के माध्यम से समाज के बौद्धिक स्तर, उसके रहन-सहन, सभ्यता-असभ्यता आदि को काफी कुछ समझा जा सकता है। कहावतों में लोक-जीवन की चेतना व आत्मा का निवास होता है। इनमें पूर्वजों के अनुभव एवं इतिहास समाहित होते हैं। यह पीढ़ी दर पीढ़ी को उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त होते हैं।

कहावतें लोक से जुड़ी उक्ति हैं, इ सीलिए इन्हें लोकोक्ति भी कहा जाता है। इनके माध्यम से लोक नीति, लोक-प्रतिभा एवं लोक-संस्कारों का दिग्दर्शन किया जा सकता है। यदि कहा जाय कि कहावतें/ लोकोक्तियाँ लोक की बौद्धिक सम्पदा हैं, तो अनुचित नहीं। कहावतें प्रायः संक्षिप्त, सारगर्भित, लयात्मक, अनुप्रासयुक्त और प्रभावशाली अनुभूति की अभिव्यंजक होती हैं। इनकी शैली सरल और इनके भाव सजीव होते हैं। कहावतों का लोक प्रवाह अति प्राचीन काल से बना हुआ है, जो काल एवं परिवेश विशेष में प्राप्त अनुभवों के साथ क्रमशः समृद्ध होते गया है। कहावतें सार्वकालिक, सार्वदेशिक एवं सदा प्रासंगिक बनी रहेंगी। लोक जीवन से प्रत्यक्ष सम्पर्क द्वारा संकलित कुछ कहावतें यहाँ दी जा रही हैं। इनका महत्व स्वयंसिद्ध है।

१. अँड़ुआ बैल बंहेड़ुआ पूत, खा ले बेटा कहीं सुत। (बंहेड़ुआँउअवारा, कहा न मानने वाला)

२. अंजोरिया धरम के रात ह।

३. अंधरा कूटे लंगड़ा कूटे, हमरा चाउर से काम।

४. अइली ना गइली फलां ब कहइली।

५. अउरी जात के भुखाइल ना गोंड के लवलइ। (गोंड़उभंड़सार, जो दिन भर कुछ न कुछ खाते रहता है, पेट भरे रहने पर भी वह उतना खा जाता है, जो एक भूखा व्यक्ति खाता है, यही लवलई है)

६. अकरावन पिया मर गइले, सेजिया देख भयावन भइले। (अकरावनउअकर्मण्य, कर्महीन)

७. अकेले मियाँ रोवस कि कबर खानस।

८. अगरो अगरइली त खँडतर ले परइली। (खँड़तरउचिथड़ा, पराइलउभागना)

९. अगल-बगल घर गोलक में। (परस्पर सहयोग के आभाव में विपत्ति को निमंत्रण)

१०. अगली भइली पिछली, पिछली पुरधाइन। (पुरधाइनउप्रधान, मुख्य)

११. अगुताइल कोंहार लगले मूड़ी से माटी कोड़े।

१२. अगुताइल बिटिया के लइका भइल, गोड़ा तर धइल,सियार ले गइल।

१३. अघाइलो भइंस पाँच काठा। (अघाइलोउभर पेट भोजन किया हुआ)

१४. अण्डा सिखावे बच्चा के चेंव-चेंव मत कर।

१५. अनका धन पर तीन टिकुला!

१६. अनका धन पर तेल बुकवा।

१७. अनका धन पर विक्रम राजा!

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

१८. अनका धन पे रोवे रे अँखिया!

१९. अन्न बिनु लुगरी पुरुख बिनु पइया, लुगवा के फटले धनि भइली बउरइया। (पुरुष अन्न के आभाव में लुगरी, अर्थात् चिथड़ा, फटा-पुराना कपड़ा, कमजोर वस्त्र की तरह खस्ताहाल हो जाता है, और स्त्री पति के बिना पइया (बिना दाना की छिमी, पट्टा!) की तरह जर्जर, खोखला, निरस या बेदम हो जाती है। यहाँ 'लुगा का फटना' एक मुहावरा है, तात्पर्य यह कि फटेहाल जिंदगी पाकर मनुष्य पागल की दशा को प्राप्त करता है।)

२०. अन्हरा सियार के पकुआ मेवा दुर्लभ ? (पकुआउबरगद का फल)

२१. अन्हरा सियार के महुआ मिठाई।

२२. अन्हरी गाय के राम रखवार।

२३. अपना घर में कुकुर के सेना।

२४. अपना दही के अहीर खट्टा ना कहे।

२५. अपना दुआर कुत्तवा बरिआर।

२६. अपना बिनु सपना, गोतिया के धन कलपना। (गोतिया का धन रहने से क्या लाभ जब वह अपने लिए सपना ही हो, या किसी काम ना आवे)

२७. अपना मने सजनी, के गाँव के लोग कहे पदनी। (सजनीउसज्जनी, सभ्य, अच्छा)

२८. अपना ला लालबिल जगतर ला दानी। (लालबिलउलु-लु, छु-छु, दरिद्रता की दशा)

२९. अपना हारल मेहरी के मारल केहु ना कहे।

३०. अपने उख्खा सुगा के पढ़ावऽ तारे। (उख्खाउउल्लू,व्यंगार्थ-मूर्ख)

३१. अपने दिल से समझो पराये दिल की बात।

३२. अब दिनन भइल भारी, अब का लदबऽ हो बेपारी।

३३. अबर कुटनिहार दउर-दउर फटके।

३४. अबर के मेहरारू गाँव भर के भउजाई।

३५. अबर सवार घोड़ी फोद काढ़े ले।

३६. अभागा गइले ससुरार, तहँवो मांड़े-भात।

३७. अरधी मेहरारु बटैया खेत। (कोई भरोसा नहीं)

३८. अरवा चाउर बसिया माँड़, ओहि में डाले समझी के डाँड।

३९. अर्रे खाइल पर्रे पादल। (अर्रे उ यहाँ, पर्रे उ वहाँ)

४०. अल्लाह के एक लड़का!

४१. अहीर के लाठी कपार पर।

४२. अहीर गड़ेरिया पासी, तीनो सत्यानासी।

४३. अहीर बहीर बन बइर के लासा, अहीर पदलेस भइल तमासा।

४४. अहीर बुझावे से मरद।

४५. अहीर साठ बरिस ले नाबालिग रहेले।

४६. अहीर साधु, मूसर धनुही ना होले। (मूसर उ ओखली का मूसर, धनुहीउधनुष)

४७. अहीर से इयारी भादो में उजारी।

४८. अहीर, राजपुत, डोंम, तीनो जात हड़बोंग। (हड़बोंगउ हल्ला-हुड़दंग मचाने वाला)

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

४९. अहीरिन के माँग में सोने का मंगटीका।

५०. आँख आन्हर देह मरखाह।

५१. आँख के अंधा नाम नयनसुख।

५२. आँख के आन्हर गांठ के पुरा।

५३. आँख चले भौं चले, अउर चले पपनी। सोरहो घर लट्टा लगावे, इहे घर कुटनी। (परस्पर झगड़ा लगाने वाली औरत आँख, भौं और पुतली से इशारा करती है। 'लट्टा'- महुआ और भुना चावल ओखल में कूटकर हलवा बनाया जाता है, इसे लट्टा कहते हैं। यहाँ व्यंजना में प्रयुक्त)

५४. आँख त हइये ना कजरौटा चाही।

५५. आँख ना दीदा मांगे मलीदा।

५६. आँख बिलबिल बग्गा में चरवाही। (बिलबिल उमोतियाबिन्द कीचड़-पानी युक्त, बग्गाउस्ई का खेत)

५७. आँख में न कान में, एगो लकरी। सउसे समुंदर में एगो मछरी।

५८. आँवा के आँवा झाँवा।

५९. आइ-माइ के टिका ना, बिलाई के भरमंगा।

६०. आइल थोर दिन गइल ढेर दिन।

६१. आइल बानी गवने, सकोचऽ तानी बात, ना तऽ अउर लेती भात।

६२. आइल मघवा, फूलल गाल, फिर उहे हाल।

६३. आई आम चाहे जाई लबेदा।

६४. आखिर मुरुख पछ्तइहें, टटका भात बसिया क के खइहें।

६५. आखिर संख बाजल, बाकिर बावाजी के पदा के।

६६. आगी के तपला से जाड़ ना जइहें, पिया के कमाई से हृदया ना जुड़इहें।

६७. आगे अन्हार, पाछे सूझेना; जियरा चंडाल बूझे ना।

६८. आगे नाथ ना पाछे पगहा।

६९. आगे बैजू, पीछे नाथ। (पहले बैजू, अर्थात् बदमाश को प्रणाम् करो, तब नाथ (सज्जन) को)

७०. आतुर वश कुकर्मा।

७१. आदमी के दिन घोड़ा के दिन लागले ना रहे।

७२. आदमी चलते चिन्हाला।

७३. आदमी बन टेले, जल ना टेले।

७४. आधा बात समधिया जाने ले। (समधियाउसंदेशवाहक)

७५. आधा रोटी बस, कायथ हईं कि पस (पशु)!

७६. आनकर मूड़ी बेल बराबर।

७७. आनी से बानी भाखा से पहचानी।

७८. आन्हर आँख बबुर पर झटहा। (झटहाउछेटा लबेदा)

७९. आन्हर कुकुर बतासे भोंके । (बतासे उ हवा की आहट पाकर। अर्थात् अनायास, बिना तुक के भोंकना, व्यंजना में आशंका, संदेहमात्र पर हो-हल्ला करना)

८०. आन्हर गुरु बहिर चेला, मंगले गुड़ लेअइले ढेला।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

८१. आन्ही के आगे बेना के बतास! (बेनाउपंखा, बतासउहवा)

८२. आप रूखा भोजन परूखा सिंगार।

८३. आपन अपने ह, विरान विराना। (विरानउ पराया, अनजान)

८४. आपन करनी पार उतरनी।

८५. आपन कानी रहे उतानी।

८६. आपन काम मोहि आवे दे।

८७. आपन दिया बार के मस्जिद के दिया बारी।

८८. आपन निकाल मोर नावे दे। (अपना काम रोक कर मेरा करो, व्यंजना में स्वार्थभक्ति)

८९. आपन फूली केउ ना निहारे, दोसर के ढेढ़ निहारे ला। (फूलीउआँख का मांडा, ढेढ़उ कनडेरपन)

९०. आमा गिहथिन रहली, त भरूके-भरूके पिसान भइल। (गिहथिन उगृहस्थिन, गृहस्थ की औरत, गृहणी, प्रचलित अर्थ कुशल, प्रवीण, होशियार। भरूका उ भांड़ा ; ज्यादा होशियारी घर की बरबादी)

९१. आवते बहुरिया जनमते लइकवा। (नई दुल्हन और नवजात शिशु को विशेष आदर मिलता है)

९२. इ कढ़ावे ली, त उ घोंटावे ली। (हाँ में हाँ मिलाना)

९३. इ गुर खइले कान छेदवले। (गुरउ गुड़)

९४. इ बिलाइ बने गइली, उ महोखा बन गइलन।

९५. इ रास्ता केने जाई ?, त कोड़ऽ तानी।

९६. इजत बरोह जोगवले से।

९७. इजती इजते पे मरे ला।

९८. इडिल-मिडिल के छोड़ऽ आस, धरऽ खुरपी गढ़ऽ घास।

९९. इ यर फूटल बीयर फूटल, बाबा हो कुँआरे बानी।

१००. इ सर निकलस दरिदर पइसस।

१०१. इ सर से भेंट ना दरिदर से बैर।

१०२. उ डाढ़ी-डाढ़ी त इ पाते-पाते। (एक से बढ़ कर एक, छकाने की कोशिश व्यर्थ)

१०३. उखड़े बाल ना बरिआर खाँ नाम।

१०४. उजरा गाँव में ऊँट आइल, लोग कहे बलबले हऽ।

१०५. उजारी टोल मुरारी महतो।

१०६. उठ लिहली मुँह धो लिहली, पान के बीरा चबा लिहली।

१०७. उठऽ बहुरिया सॉस ल ऽ ढेकी छोड़ऽ जाँत ल ऽ। (इसी पर एक अन्य कहावत है - खड़ा होखऽ त कोड़ऽ, बइठऽ त चेखुरऽ ! अर्थात् चैन नहीं)

१०८. उधरिया बइठले अगिला मांगा। (मांगाउनाव का अगला भाग, जिसपर बैठा जा सकता है)

१०९. उधिआइल सतुआ पितर के दान। (बिना मन का सम्मान)

११०. उपास भला कि मेहरी के जूठ भला !

१११. उरदी के भाव पूछे, त कुल्थी/बनउर क सेर! (कुल्थी-एक प्रकार की जड़ी, जो पशु रोग में दी जाती है)

११२. ऊँट चुराये निहुरल जाय।

११३. ए कुकुर दूबर का ? त दू गोड़ के आवाजाही।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

११४. ए गाय! खा, तहार बाछा बिकाई।

११५. ए बबुआ! तोर भाई केइसन! घर-घर ढूँढ़े बिलरिया एहिसन।

११६. ए बुरी गोह! धरे के गोड़ त धइले बाड़े सोर!

११७. ए भइंस, आपन पोंकल नेवारऽ, तहरा दूध से बाज आवतानी।

११८. ए भेंड़िया भेंड़ चरइबे!, त हमार कमवे कवन !

११९. ए हाथ करऽबऽ, त ओ हाथ पइबऽ।

१२०. एक आन्हर एक कोढ़ी, भले राम मिलवले जोड़ी।

१२१. एक घर डाइनो बक्से ले। (बक्सनाउछेड़ना)

१२२. एक टका के मुर्गी नव टका के मसाला।

१२३. एक त गउरा अपने गोर, दूसर लहली कमरी ओढ़।

१२४. एक त गिलहरी पेड़ से गिरल, दूसरे मरलख मुअड़ी। (मुअड़ीउमोटा लबेदा)

१२५. एक त छउँड़ी नचनी, गोड़ में परल बजनी, अउरी हो गइल नचनी।

१२६. एक त मोरा रच्चे ना, तीन सेर में छूटे ना।

१२७. एक बूँट के दू दाल। (एकता में बिखराव)

१२८. एक बोलावे चौदह धावे।

१२९. एक भेंड बिना पोंछ के, त रक्षा करिहें भगवान। आ लेहँड़ बिना पोंछ के, त का करिहें भगवान !

१३०. एक मन के बंसी, चौरासी मन के छीप।

१३१. एक लकड़ी, नब्बे खर्च।

१३२. एक हाथ के ककरी, नौ हाथ के बिआ।

१३३. एके माघ ले जाड़ ना होला।

१३४. एड़ी के मारे भेड़ी के खौरा। (गर्ज दूसरे को, खुद बेचैन)

१३५. एहि ले ललगंड़िया के सोने के बनुक। रात चलावे, दिन खरची के दुःख।

१३६. ओएड़े-गोयड़े खेत चरइहऽ मेहरी के टिकुला देख-देख जइहऽ।

१३७. ओछरी के भोज में छुछुनरी गइल नेवता।

१३८. ओढ़ले पहिरले वर, छपले-छुपले घर।

१३९. केंगाल ठीक, जंजाल ना ठीक।

१४०. केंठी, चंदन, मधुरी बानी, दगाबाज के तीन निसानी।

१४१. कउआ खइले अमर!

१४२. कतनो अहिर होई सयाना, लोरिक छाड़ि न गावहिं आना।

१४३. कथनी कथे अगाध के चले गिध के चाल। (अगाधउकठिन, गंभीर, सुसंस्कृत)

१४४. कनिओ के मौसी, दुलहो के मौसी।

१४५. कनिया के आख में लोरे ना, लोकनी हकन करे। (लोकनीउमंथरा, हकनउ गला फाड़-फाड़ कर रोना)

१४६. कपड़ा के दागी धोबी कीहाँ, अउर दिल के दागी भगवान कीहाँ मिटेला।

१४७. कपार पर के लिखल के मेटाई !

१४८. कभी नाव पर गाड़ी, कभी गाड़ी पर नाव।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

१४९. कम कूबत, मार खाये के निसानी।

१५०. कम पूंजी पट्टा, त करऽ पसरहट्टा। (पसरहट्टा उ क्ष्ब्ददृद्ममद्धड्ढद्ध फेरी लगाना, अनाज की खरीद-बिक्री)

१५१. कमाय धोती वाला खाय टोपी वाला।

१५२. करकसा बेटी करकसा चाल। (करकसाउकर्कस, कठोर वचन बोलने वाली)

१५३. करत में डॉंड़ टूटे खात में नीक लागे।

१५४. करनी ना धरनी, धिया होइहें ओठ बिदरनी।

१५५. करम फूटल गेहूँ के, गेहूँ गइले घोनसारी। (घोनसारीउ भंड़सारी)

१५६. करवाँ कोंहार के धी जजमान के।

१५७. करिअवा भेली ढेर मीठ।

१५८. करिआ अच्छर भइंस बराबर।

१५९. करिआ कमरी में लाल के तोई। (तोईउरजाई या झुŠला में लगने वाला एदृद्धड्ढड्डद्ध)

१६०. करिया बाभन गोर चमार। (तेज होते हैं)

१६१. करिया भइंस अन्हारी रात, बजर परे अहिर के जात।

१६२. करिया में कुच-कुच करिया में काई। करिया भतार देख आवेला ओकाई। (ओकाईउउल्टी)

१६३. करिया वाभन गोर शुद्र, ओह के देख कॉंपे रुद्र।

१६४. कर्जा लेके साख बनी!

१६५. कलकत्ता के कमाई जूता छाता में लगाई।

१६६. कलवार के लइका भूखे मरे, लोग कहे ताड़िए पी के मातल बा।

१६७. कहला बिनु कथनी टेढ़! (बार-बार कहने पर भी कोई प्रभाव नहीं और एक बार कड़े ढंग से कह देने पर चिढ़)

१६८. कहला से धोबी गदहा पर ना चढ़े।

१६९. कहाँ राजा भोज कहाँ भोजवा तेली!

१७०. कहावे के अनेरिआ, चलावे के लधार। (अनेरिया उबिलाला, किसी काम का नहीं, लधारउ लात)

१७१. कहिया राजा अइहें, त कब हँडिया धोअब !

१७२. कहीं के ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती के कुनबा जोड़ा।

१७३. कहे के रहनी कहल ना जाव, कहला बिना रहल ना जाव।

१७४. का खुरपी के बान्हे धइले, का खुरपी के बेंचले!

१७५. का पर करूँसिंगार पिया मोर आन्हर। (का पर उ किस पर)

१७६. कॉंस-पितर कवनो गहना ना, करिया भतार गोड़ जातऽ ना।

१७७. काठ के हँडिया एके बेर।

१७८. कातिक गइले, बैल पदवले। (कुसमय प्राप्ति)

१७९. कान कुइस कोत गर्दनिया, ए तीनों से हारे दुनिया। (कोतउभूरा आँख वाला)

१८०. कानी गाय के अलगे बथान।

१८१. कानी बिलाई के घर में शिकार।

१८२. काम करे नथ वाली, लागे चिरकुटही।

१८३. काम के ना काज के दुस्मन अनाज के।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

१८४. काम के ना काज के कटावऽ घोड़ी घास के।

१८५. काम धाम में आलसी भोजन में होसियार।

१८६. काम न धन्धा अढ़ाई रोटी बन्धा।

१८७. काम प्यारा चाम नहीं।

१८८. काल्ह के बनिया आज के सेठ।

१८९. काहि रे रजवा के घरे अइले, काहि रे विदेसे गइले।

१९०. काहें भीम गए अगुताई, तातल दूध ओठ जरि जाई। (तातलउगर्म)

१९१. कि पेट भारे अनवतवा भाय, कि पेट भारे नमिया माय। (अनन्त त, नवमी)

१९२. कुकुर बिलाई के जमघट।

१९३. कुटुम रे कुटुम जइसन रहले कुटुम ओहिसन पवले कुटुम।

१९४. कुत्ता काटे अनजान के बनिया काटे पहचान के।

१९५. कुत्ता के पोंछ में केतनो धी लगाईं, टेढ़ के टेढ़े रही।

१९६. कुदे के बैल, त कुदेला तंगी। (तंगीउ लादी, जीन)

१९७. कुबंस ले निरबंस अच्छा।

१९८. कुल कपड़ा रखले से।

१९९. के मनावल! त बकरी।(काफी मान-मनौव्वल के बावजूद चुप न हुआ, कुछ देर में स्वयं चुप हो गया)

२००. के हऊ! त बर के मउसी; नून देबू! त अगतिआरे नइखे। (अगतियार उ अधिकार)

२०१. केंकरवा के बिहान केंकरवे खाला। (केंकरवाउ केकड़ा, बिहानउबिआड़, नवजात)

२०२. केंकरा पैर पसारे, त पोखरा के थाह पावे।

२०३. केतनो अहिर पिंगल पढ़े, बाकिर बात जंगल के बोले।

२०४. केतनो करिहें चतुराई विधि के लिखल बाँव ना जाई।

२०५. केतनो खेती बना के जोतीं, एक दिन दखिना लग जाई।(दखिनाउएक प्रकार का फसली रोग)

२०६. केतनो चिरई उड़िहें आकास, लेकिन करिहें धरती के आस।

२०७. केतनो बरई पान जोगइहें, पाला परिए जाई।

२०८. केहु के बैगन पंथ केहु के बैर।

२०९. केहु खाते-खाते मुये, केहु खइला बिनु मुये।

२१०. केहू ना पूछे हा दे बानी।

२११. कोइरी के पहुना! (आलसी, बेकाम का)

२१२. कोई गंगा नहाइल कोई गुड़ही। (फिर भी बराबरी)

२१३. कोई जनम के संघाती होला, करम के ना होला।

२१४. कोई लेत कोई देत कोई टक देले बा। (टक देनाउनजर लगाना)

२१५. कोढ़िया डरावे थूक के भरोसे।

२१६. कोदो साँवा अन्न ना, बेटी दामाद धन ना।

२१७. कोल्ह एहिसन मरदा, कोतार एहिसन जोय, सेकर लइकवा चीलर एहिसन होय। (हट्ठा-कट्ठा पुरुष-स्त्री, लेकिन लड़का दुबला-पतला)

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

२१८. कौआ के आँड़ उड़ते में चिन्हा जाला।

२१९. कौआ ले कबलवे चतुर। (कबलवेउकौआ का बच्चा)

२२०. खइले पियले साथ।

२२१. खग ही जाने खग के भाखा।

२२२. खा ले पी ले, चुल्हा के ढहा दे।

२२३. खा ले बेटी दूध-भात आखिर परबे विराना हाथ।

२२४. खाऽ त धी से, जाऽ त जी से।

२२५. खाँड़ छोड़ सउँसी पर धावे, सउँसी मिले ना खांड़ा पावे। (खाँड़उटुकड़ा, सउँसीउसंपूर्ण)

२२६. खाए के ना खिआवे के दउर-दउर कोआ बिछावे के।

२२७. खाए के नाना के, कहाए के दादा के।

२२८. खाए के बेटी, लुटे के दमाद, हाथ-गोड़ तजले बा गोतिया-देआद। (हाथ-गोड़ तेजल (मुहावरा) उ कोई काम न करना, अकर्मण्यता)

२२९. खाए के मन ना नौ गो बहाना।

२३०. खाए के मांड़ ना नहाये के तड़के।

२३१. खाना कुखाना उपासे भला, संगत-कुसंगत अकेले भला।

२३२. खास भीम हगस सकुनी।

२३३. खिआवे के ना पिआवे के, मांग-टीका धोवे के। (खर्च न करना, किन्तु सुख चाहना)

२३४. खिचड़ी खात नीक लागे, बटुली मलत पेट बथे।

२३५. खेत खाय पड़िया, भइंस के मुँह झकझोरल जाय।

२३६. खेत चरे गदहा मार खाए धोबी।

२३७. खेत ना जोतीं राड़ी भइस ना बेसाहीं पाड़ी।

२३८. खेत-खेत पाटा, देह-देह नाता।

२३९. खोंसी के छाल पर कुत्ता के मांस बिकाय।

२४०. खोंसी के जान जाय, खवैया के सवादे ना।

२४१. खोलले बकरी, बन्हले लकड़ी।

२४२. गइल घर बुरबकवे बिना।

२४३. गइल जवानी फिर ना लौटी, चाहे धी मलीदा खाय।

२४४. गइल जवानी माझा ढील। (माझा उ शरीर)

२४५. गइल बहुरिया तीनों से- सैंया, गोसैंया, रसोइया से।

२४६. गइल भइंस पानी में।

२४७. गइल माघ दिन उनतिस बाकी।

२४८. गत के ना पत के सुते अइले सट के।

२४९. गदहा के इयारी लात के सनसनहट।

२५०. गदही दिहलऽ दँतकटही ए बैठा, गइया दिहलऽ मरखाह। छँउड़ी दिहलऽ घर घूमनी ए बैठा, उठि-सुति मुअड़ी खाय।

२५१. गया मरद जो खाय खटाई, गई नारि जो खाय मिठाई।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

२५२. गया राज चुंगला पैठा, गया पेड़ बगुला बैठा।

२५३. गया आसन बनारस पीठा। (सिद्धान्त और व्यवहार में कोई तालमेल नहीं; बात का कोई ठिकाना नहीं)

२५४. गरदन में ढोल परल, रो के बजावऽ चाहे गा के।

२५५. गरह से निकल गरहन में।

२५६. गलगर होइहऽ धिया, बड़ होके रहिहऽ। (मुँहगर, बातूनी की हर जगह इज्जत)

२५७. गवना के घूँघ अउर लइकाई के कुरई ना मिले।

२५८. गाँव भर ओझा, चलीं केकरा सोझा !

२५९. गाछे कटहर, ओठे तेल।

२६०. गाय ओसर भइंस दोसर। (ओसरउपहिल बिआन)

२६१. गाय गुन बछड़ा पिता गुन घोड़, ना कुछ त थोड़े-थोड़।

२६२. गाय ना बाछा, नींद परे अच्छा।

२६३. गाय बाभन घुमले फिरले।

२६४. गाया में गाय दान, रास्ता में बाछी, घर अइला पर बावा जी खोसी लेबऽ कि पाठी !

२६५. गाल देब बजाय, सासु जइहें लजाय।

२६६. गुदर-मुदर सब सोये, बिसनिया लोगवा रोवे। (होशियार होकर भी लड़कपन करना)

२६७. गुरु गुरुये रह गइले, चेला चीनी भइले।

२६८. गुरु से गुरुआई ?

२६९. गृद्ध दृष्टि अपार।

२७०. गेंठी खुले ना बहुरिया दुबरास।

२७१. गेहूँ के साथ घून पिसाला।

२७२. गोजर के एगो गोड़ टूटिये जाई, त ओकर का बिगड़ी!

२७३. गोड़ गरीबनी मगज बिलंड। (शरीर में जान नहीं, किन्तु घमण्ड अधिक)

२७४. गोदी के दहाइल जा, ढीढ़ के ओझाई।

२७५. गोबर जरे, गोइठा हँसे।

२७६. गोबर सूँघला से मुसरी जीओ। (मुसरीउचूहा)

२७७. गोर चमइन गरबे आन्हर।

२७८. गोसेया भुइंया कुकुर पुंजौली। (पुंजौलीउपुआल का ढेर)

२७९. घंटी करे घनर-घनर अउर नकजपना। ठाकुर जी के अंगुठा दिखा के खा ले रे मन अपना।

२८०. घटले नाती भतार।

२८१. घर के मारल बन में गइली, बन में लागल आग। बन बेचारा का करे कि करमें लागल आग ?

२८२. घर छाय देखनी घर छुप देखनी, घर में तनी आग लगा के देखनी।

२८३. घर ना दुआर बर तर ठाढ़। (बहसपना)

२८४. घर पर छपर ना बाहर फुटानी।

२८५. घर फुटे गंवार लूटे। (गँवार ऊ गँवइ, ग्रामीण, व्यंजना में असभ्य, लुहेड़ा, लूचा)

२८६. घर भर देवर भतार से ठट्ठा।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

२८७. घर में खरची ना, बाहर ढ़कार।

२८८. घर मेहरे ना, बेटा बाहर क्रिया खास।

२८९. घर-घर देखा एके लेखा।

२९०. घरहू लौका बनहू लौका लौका के तरकारी, एहिसन घाट उतरले लौका गइले ससुरारी।

२९१. घीव के कूंड़े, नाहीं त जव के ठूढ़े।

२९२. घीव देत घोर नरिया।

२९३. घीव संवारे काम बड़ी बहू के नाम।

२९४. घीवो खाइब, त खेंसारी के दाल में।

२९५. घूघ मोर चुवेला ठेहुनवा, पाद मोर सुनेला पहुनवा।

२९६. घोंघा के मुँह खुलल।

२९७. घोंघा में बनावेलीन सितुहा में खालीन। (खालीन उ खाती है)

२९८. घोड़ी पड़ी अहिर के पाले, ले दौड़ायल आले-खाले।

२९९. घोड़े की नालबाजी में गदहा पैर बढ़ावे।

३००. चट मड़वा पट बिआह।

३०१. चट लिटी पट भंटा।

३०२. चढ़े के हाथी पर चले के भुइंया-भुइंया।

३०३. चमड़ा के ढेर पर कुत्ता के रखवारी।

३०४. चमार के सरपला से गाय मरी!

३०५. चमार सियार सदा होसियार।

३०६. चरभर के अंत मिले, मुरघुइंस के ना मिले। (चरभरउ अधिक बोलने वाला, मुरघुइंसउ चुप्पा अन्तर्मुखी)

३०७. चल बगेरी आपन झुण्ड।

३०८. चलनी धूसली सूप के, जिनका अपने सहसर गो छेद।

३०९. चार बेद चार ओर, ताहि बीच चतुरी। चारूवेद करऽ तारे चतुरी की चाकरी। (बिना बुद्धि जरो विद्या)

३१०. चाल चले सिधरी, रोहू के सिर पर बिसरी।

३११. चालाक पदनिहार पहिलहीं नाक दाबे।

३१२. चाहे सैंया घर रहे, चाहे रहे बिदेस।

३१३. चिउरा के गवाह दही।

३१४. चिउरा दही बारह कोस, लिचुई अठारह कोस। (लिचुईउपूड़ी)

३१५. चित परे त हमार, पट परे त तहार।

३१६. चिरइआ उहे बिआ, पंखिया रंगा गइल बा।

३१७. चिरई के जान जाय लइका के खेलवना।

३१८. चींटी अपना पावें भारी, हाथी अपना पावें भारी।

३१९. चीना के सपूत भइले मार्हा। (चीना उ एक प्रकार का अन्न, इसके चावल को भूनने पर 'मार्हा' बनता है। 'मार्हा' दूध दही के साथ खाने पर बहुत अच्छा लगता है)

३२०. चेत करऽ बाबा बिलार मारे मटकी।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

३२१. चेरिया बिअइली मर के, रानी कहली 'बेटिए' ?

३२२. चोर के मुँह चाँद निअर। (निअरउजैसा)

३२३. चोर के हजार बुद्धि।

३२४. चोरवा के मन बसे केंकरी के खेत में।

३२५. चोरी करे निहाय के, करे सूई के दान। उ चाहे बैकुण्ठ के त बुरबक बाड़े राम। (निहायउसोनारी का एक समान जिसपर सोना, चांदी पीटा जाता है)

३२६. छाव करे छौंड़ी छाव करे, अंगुरी काट के घाव करे। दवा देहला पर छपबे ना करे, बिना भतार के रहबे ना करे।

३२७. छीन छोर के खाईं, बापू कहाईं।

३२८. छुछुन्दर के माथ पर चमेली के तेल। (छुछुन्दरउ चूहे की एक प्रजाति)

३२९. छोट मुँह बड़ कवर।

३३०. छोलकट खटिया ढुलकत घोर नारी करकसा विपत के ओर। (घोरउघोड़ा, विपत के ओरउअतिशय विपत्तिदायक)

३३१. छोलकट जात बदरकट घाम, मउगा से पत राखऽ राम। (छोलकटउ छुद्र,इ शूद्र, पतउइज्जत)

३३२. छोहे छाती फाटे लोर के ठेकाने ना।

३३३. छौंड़ी रे तोर आँगन कतेक !

३३४. जग जगदीश के।

३३५. जजमाने के घी, जजमाने के लकड़ी स्वाहा।

३३६. जथा के ठेकाने ना कुटुम्ब करस धावा। (जथाउपूंजी, थाती)

३३७. जनम के दुखिया करम के हीन, हाथ में खुरपी मोथा बीन। (मोथाउएक प्रकार का जड़ीयुक्त घास)

३३८. जनमत खइले माता-पिता के, घुसकत आजा-आजी। ममहर में ननिअउरा खइले, कुल में दागा-बाजी।

३३९. जनाना के खाइल मरद के नहाइल केहू ना देखे।

३४०. जब कवर भीतर, तब देवता पीतर।

३४१. जब चिन्हबे ना करब त आपन केहिसन !

३४२. जब जेहिसन तब तेहिसन, इ ना बूझे से पंडित केहिसन!

३४३. जब राम तकिहें सब दुःख भगिहें।

३४४. जब ले करेब पूता-पूता, तब ले लगाइब आपन बूता। (बूताउकाबू, ताकत, शक्ति)

३४५. जब साग से ना जुड़इनी, तब साग के पानी से जुड़ाएब!

३४६. जब हाँड़ी पर ढकना ना होखे, त बिलाइयो के लाज करे के चाहीं।

३४७. जबर मउगी के अबर बोतू। (मउगीउऔरत, बोतूउपति)

३४८. जबरा करे जबरई, अबरा करे नियाब। (नियाबउन्याय)

३४९. जबरा मारे, रोवे ना दे।

३५०. जबाब से केहू जीभ काटी?

३५१. जरी जलुहार त पुलंगी भूमिहार। (जलुहारउजोलहा, मुसलमानों के बीच एक छोट जाति)

३५२. जव के दिन जइहऽ, सतुआरी के अइहऽ।

३५३. जव के रोटी गबर-गबर, सास ले पतोह जबर।

३५४. जवन जानल जाला, तवन बात के सीअल जाला।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

३५५. जवना डार पर बइठे के ओही के काटे के।

३५६. जवना पतल में खाए ओही में छेद करे।

३५७. जवान मउगी के कोख भारी।

३५८. जस दुलहा तस बनी बराती।

३५९. जस बबुआ तस बबुनी नाहीं, जस ढेबुआ तस कुरूई नाहीं। (ढेबुआउअंग्रेजी शासन में प्रचलित मुद्रा)

३६०. जस-जस धीया बाढ़ेली, तस-तस काँढ़ काढ़े ली। (धीयाउबेटी, काँढ़ काढ़नाउचिन्ता बढ़ाना)

३६१. जहाँ गेहुअन के मूड़ी, तहाँ बाबू के सिरहान।

३६२. जहाँ चार कानू, तहाँ बात मानू।

३६३. जहाँ चार गगरी, तहाँ लड़बे करी।

३६४. जहाँ ढेर मउगी, तहाँ मरद उपास।

३६५. जहाँ न पहुँचे रवि, तहाँ पहुँचे कवि।

३६६. जहाँ मीठा होई, उहाँ चिंउटी लगबे करी।

३६७. जहाँ मुर्गा ना होई, तहाँ बिहाने ना होई?

३६८. जहाँ लूट परे तहाँ टूट परी, जहाँ मार परे तहाँ भाग परी।

३६९. जाईं नेपाल, संगही कपार।

३७०. जाइज पर रहेब त करऽबऽ का?

३७१. जागऽ किसान, भइल बिहान, फौड़ा उठावऽ चलऽ खेते।

३७२. जागल भाग पड़ले पाले, धइले पोंछ पटकले खाले।

३७३. जातो गंवइली, भातो ना मिलल।

३७४. जादे जोगी मठ के उजाड़।

३७५. जानीं से सानीं।

३७६. जाने ले चीलम, जिनका पर चढेला अंगारी।

३७७. जिअला में बोरा ना, मरला पर दोलाई। (दोलाईउरजाई)

३७८. जिन पुत जनमले ना होइहें, उ अबटले का होइहें। (अबटले उ उबटन लगाने से।)

३७९. जिन बहु अपने छिनार, लगवली कुल परिवार।

३८०. जीअता पर छूँछ भात, मरला पर दूध भात।

३८१. जीतला के अगाड़ी, हारला के पछाड़ी।

३८२. जुरता पर कुरता।

३८३. जुरे साग ना सोहरत जाय।

३८४. जे खाय गाय के गोस, उ कइसे हिनू के दोस! (दोसउदोस्त)

३८५. जे जनमते ना उजिआइल, उ आगे का उजिआई?

३८६. जे ना पढ़ी फकरा, उ का पढ़ी पतरा! (फकराउझूठ-साँच, पाखण्ड)

३८७. जे ना पूछे से काऊबाबा। (जे ना पूछेउजिसको कोई न पूछे)

३८८. जे पंच, सेही चटनी।

३८९. जे पांड़े के पतरा में, से पंडिताइन के अंचरा में।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

३९०. जे फूल होखे से महादेव जी पर।

३९१. जे बनावे जाने, उहे खाए भी जाने।

३९२. जे बाड़े से गुरूबाबा।

३९३. जे रोगिया के भावे से बैदा फुरमावे।

३९४. जेकर धन जाले ओकर धरम जाले।

३९५. जेकर पिया माने, से सोहागिन।

३९६. जेकर बनरी से ही नचावे, दोसर नचावे त काटे धावे।

३९७. जेकर माई पूड़ी पकावे, सेकर बेटा छछने। (छछनेउतरसे)

३९८. जेकर मुँख बदन न पाईं, ओकरा आंगन का करे जाईं ?

३९९. जेकर रोटी उ बन-बन फिरे, फकीरवा ठोक-ठोक खाय।

४००. जेकरा घूरा बइठे के ओकरे आंड़ दागे के?

४०१. जेकरा घेघ ओकरा उदबेगे ना, देखवैया का उदबेग? (उदबेगउ उद्विग्नता, बेचैनी)

४०२. जेकरा छाती में बार ना ओकर एतबार ना।

४०३. जेकरा पर चूई, से छायी।

४०४. जेकरा पास माल बा, ओकर गोटी लाल बा।

४०५. जेकरे माई मरे, ओकरे पतल में भात ना।

४०६. जेतना के मुन्ना ना ओतना के झुनझुना।

४०७. जेतना घटवा गरजे ओतना बरसे ना।

४०८. जेतना मुअड़ी मारी ओतना हगाईं।

४०९. जेतने घी ओतने चीकन।

४१०. जेहिसन कोंहड़ा छान्ही पर, ओहिसन कोंहड़ा भूइयाँ।

४११. जेहिसन जात ओहिसन भात।

४१२. जेहिसन दाल-भात, ओहिसन फतेहा।

४१३. जेहिसन देव ओहिसन पूजा।

४१४. जेहिसन देवर ओहिसन भउजाई।

४१५. जेहिसन नेत ओहिसन बरक्कत।

४१६. जेहिसन रहर ओहिसन बीआ, जेहिसन माई ओहिसन धीया।

४१७. जेहिसन राजा ओहिसन परजा।

४१८. जेहिसन हीरा के चोर ओहिसन खीरा के चोर।

४१९. जैसी बहे बयार पीठ तब तैसी दीजै।

४२०. जोलहा के बेगार पैठान। (बेगारउटहलुआ, आदेशपाल, बेकार)

४२१. झोरी में फुटहा ना सराय में डेरा। (फुटहाउभूजा, दाना)

४२२. टका टकाई नौ टका बिदाई।

४२३. टका पास में जोरूसाथ में।

४२४. टिटिहरी के छपला से बादर छपाई?

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

४२५. टूटलो तेली त नौ अधेली। (अधेलीउपैसा, आधा पैसा या आध आना)

४२६. ठाँव गुन काजर कुठाँव गुन कारिख।

४२७. डाँड़ डूबल जाव, ठेहुना के पते ना।

४२८. डिबनी कतके दूर, अब निअराइल बा।

४२९. ढूँढ कुकुर गोसेंया के हानि। (गोसेंयाउगोसाईं, घर का मालिक)

४३०. ढाल छुरा तरुआरि गइल कुँअर के साथ, ढोल मजीरा खंजड़ी, रहल उजैनी हाथ। (एक प्रकार का वाद्य यंत्र)

४३१. ढुलमुल बेंट कुदारी के, हँस के बोले नारी से।

४३२. ढेलाह खेत, पेटाह बेटा बाद में बुझाला।

४३३. तर धइली छितनी ऊपर धइली साग, पिअवा कहलस पदनी, त लौटल भाग। (छितनीउबांस से बना छितनार बर्तन)

४३४. तर धरती ना ऊपर बंजर।

४३५. तसलिया तोर कि मोर!

४३६. तहरा किहाँ जाएब त का खिअइबऽ, हमरा किहाँ अइबऽ त का लेके अइबऽ?

४३७. ताकते बानी, लउकत नाहीं।

४३८. ताग पाट के जूरा, चिरकुट के फुरहुरा। (जूराउजूड़ा, फुरहुराउपहनी हुई साड़ी का निचला, पैर के पास झूलने वाला हिस्सा)

४३९. ताग पाट ढोलना, कुछ नहीं बोलना।

४४०. ताड़ी के चिखना, बाप के कमाई, जोगाऽ के खाईं।

४४१. तीन कायथ कहवाँ, बिपत परे तहँवा।

४४२. तीन जात अलगरजी, बढ़ई, लोहार, दरजी।

४४३. तीन जात घचान्हर, ऊँट, बिद्यार्थी, बानर।

४४४. तीन जात हड़बोंग, राजपूत, अहीर, डोंब।

४४५. तीन टिकट महा बिकट।

४४६. तीन दिन रहई, त पियाजी से कहई।

४४७. तीन परानी पदमा रानी। (छोटा परिवार सुखी परिवार)

४४८. तीन परानी पोखरा रानी।

४४९. तीन मन में तिनमनिया, सेर भर में उतनिया।

४५०. तीन में कि तेरह में, कि सुतरी के गिरह में!

४५१. तीन विप्र कहँवा, बजर परे तहँवा।

४५२. तीस में टीस, चालिस में नखालिस।

४५३. तू गंगा पार हम जमुना पार।

४५४. तू धनैतिन धने आगर, हम तरवा के धूरे आगर।

४५५. ते गोतिन गगरी, हम ते बरोबरी।

४५६. तेतर बेटी राज लगावे।

४५७. तेलिया हारे बार-बार, दइबा हारे एक बार।

४५८. तोर नउजी बिकाय, मोर घेलुआ दे। (नउजीउचाहे न, घेलुआउफोकट का सामान)

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

४५९. तोरा त पेटवे ना त लोटवे।

४६०. थान हार जइहें, बाकिर गज ना हरिहें।

४६१. दमड़ी की हाड़ी गई, कुत्ते की जात पहचानी गई।

४६२. दरबे से सरबे, चहबे से करबे।

४६३. दवा भीतर दम बाहर।

४६४. दही के गवाह चिनी।

४६५. दही के रखवार बिलार।

४६६. दही तब सही।

४६७. दाँत के ठेकाने ना, रहरी के भसक्का।

४६८. दाजे गइल खेती, रिसे गइली बेटी। (दाजेउदूसरे के भरोसे)

४६९. दादा काटेले घास, मोरा हँसी आवेला।

४७०. दादा के भरोसे अदौरी भात।

४७१. दादा दीहें हँसुआ, त घास काटे जाएब।

४७२. दादा मरिहें त पोता राज करिहें।

४७३. दानी दान करे भंडरी के पेट फूले।

४७४. दानी ले सोम्ह भला, जे ठावें देत जवाब।

४७५. दाहे उनकर छाती फाटे, लोर के ठेकाने ना।

४७६. दिआरा के बंस, कभी राजा कभी रंक।

४७७. दिन जाला गुन भारी होला।

४७८. दिन भर चले अढाई कोस।

४७९. दिन भर मांगे त सवे सेर।

४८०. दिल लगे दिवार से तो परी क्या करे।

४८१. दुधार गाय के दू गो लातो सहल जाला।

४८२. दुनिया दुरंगी मुवल्लिक सराय, कहीं खूब-खूबी, कहीं हाय-हाय।

४८३. दू घर भोज भइल, कुतवा के मन हुलबुलिये में।

४८४. दू मने दूमनिया, तीन मने उतनिया, ना रहे त पेट कुनिया।

४८५. दूध-पूत छिपवले।

४८६. दूनो हाथ से ताली बाजे ला।

४८७. देख पड़ोसी झल्ल मारे।

४८८. देखत माया परखते छोह, जब देखीं त लागे मोह।

४८९. देखनी में से चिखनी में।

४९०. देखनीहार के धरनीहार लागे।

४९१. देखल कनिया देखल वर, कोठी तर बिछौना कर।

४९२. देखले छउँड़ी समधी।

४९३. देखहीं के बाड़े पिया, चिखहीं के नाहीं, सूरत बा कवनो लजत नाहीं।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

४९४. देखा-देखी पाप, देखा-देखी धरम।

४९५. देवकुरी गइले दूना दुख।

४९६. देह घुसके ना गेहूँ बन चाहीं (बनउ बनिहारी, मजदूरी)

४९७. देह डोरा, पेट बोरा।

४९८. देह में दम ना बजार में धक्का।

४९९. देहात में छ गाही, बाजार में नौ गाही।

५००. धन के बढ़ल अच्छा, मन के बढ़ल ना अच्छा।

५०१. धन मधे कठवत, सिंगार मधे लहँगा।

५०२. धनिके के पहुना के दाल भात बारा, गरीबे के पहुना के मकई के दारा।

५०३. धान के देस पुअरे से बुझाला।

५०४. धीया ना पूता, मुँह चाटे कुत्ता।

५०५. 'न' से 'हँ '।

५०६. नइहर जो, ससुरा जो, जांगर चला बेटी कतहूँ खो।

५०७. नइहर रहले ना जाय, ससुरा सहले ना जाय।

५०८. नइहर से आइल लुगरी, चढ़ गइल गुलरी। (गुलरीउगुलर के पेड़)

५०९. नकली नारी बिपत के ओर।

५१०. ननद के भी ननद होले।

५११. नया धोबिनिया लुगरी में साबुन।

५१२. नया मियाँ, जियादे पिआज खाले।

५१३. नया लूगा तीन दिन, लुगरी बरीस दिन। (लूगाउसाड़ी, लूगरीउपुरान साड़ी, पहना हुआ)

५१४. नया-नया राज भइल, गगरी अनाज भइल।

५१५. नरको में ठेला-ठेली।

५१६. नव जानेली छव ना जानेली।

५१७. ना अकरब मुये, ना छुतिहर फूटे। (अकरबउअभक्ष्य भोजन करने और गंदा रहने वाला, छुतिहरउ मिट्टी का वह पात्र, जिसमें जूठा अन्न रखा जाता है, अथवा जिससे पशु के खाने वाले नाद का पानी साफ किया जाता है।)

५१८. ना उ देवी बाड़ी, ना उ कराह बा।

५१९. ना केहू में दोष बा, ना केहू नीमन बा।

५२०. ना चलनी के पानी आई, ना परउस के बरहा बराई। (परउसउएक प्रकार की डाभी घास)

५२१. ना धोबिया के दोसर खाहिन, ना गदहवा के दोसर मउआर।

५२२. ना हिनुए में ना तुरुके में।

५२३. नाग मरलन डोंड़ टीका भइल। (मालिक के स्थाान पर गदहा)

५२४. नाचे कूदे तूरे तान सेकर दुनिया राखे मान।

५२५. नाचे से कब ले बांचे!

५२६. नाधा त आधा, आधा त साधा।

५२७. नानी के आगे ननिऔरा के बात।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

५२८. नानी, पानी, बेइमानी के धन ना रसे।

५२९. नान्ह बिटिया, पुरान जबड़ा, भतार के मरली चार तबड़ा।

५३०. नाम गंगादास, कमंडल में जले ना, नाम अन्हारी बारी, होम करे के पल्लवे ना।

५३१. नाम धनपति, घर पर करायने ना। (करायेनउफूस के घर का पुराना खर, डाभी)

५३२. नाम रामायन, करीखही अक्षर से भेंटे ना।

५३३. नाम लवंगिया, बसाय अंडरबोय।

५३४. नामी बनिया के नाम बिकाला।

५३५. नामे नाम, ना त अकरवले नाम। (अकरवलेउनिन्दाजनक कार्य से)

५३६. निझारल जिएला, विस्वासे मुयेला। (निझारलउस्पष्ट जबाब देने वाला)

५३७. निपले पोतले डेहरी, पेन्हले ओढ़ले मेहरी।

५३८. निरबंस अच्छा बहुबंस ना अच्छा।

५३९. निरबल के दइबो सतावे ले। (दइबोउदेव)

५४०. निरबल के बल राम।

५४१. नीम हकीम खतरे जान, भीतर गोली बाहर प्रान।

५४२. नीमन गीत गाएब, ना दरबार देखे जाएब।

५४३. नेकी बदी साथ जाला।

५४४. नेत धरम के मारी मुँह, पेट भरे तवन करीं काम।

५४५. नोहरनी देखले नोह बढ़ल।

५४६. नौकर ऐसा चाहिए घर कभी ना जाय, काम करे ताव से भीख माँग कर खाय।

५४७. नौकर के चाकर मड़ई के ओसारा।

५४८. पंडित सोइ जो गाल बजावा।

५४९. पइंचा में पानी ना परे।

५५०. पइसवा तीन, चिजुइया कीनी बीन।

५५१. पइसा ना कौड़ी, बीच बाजार में दौड़ा-दौड़ी।

५५२. पकड़े के गोड़ त पकड़ले बाड़े सोर।

५५३. पड़ोसिन सिहैली उपास।

५५४. पड़ोसिया के सिहइला से इनार के पानी झुरा जाला। (सिहाइलउकरुण क्रन्दन)

५५५. पढ़लऽ त बड़ा गुन कइलऽ, हँसलऽ त दूनों कुल नसइलऽ।

५५६. पढ़े फारसी बेचे तेल, देख भाई कुदरत के खेल।

५५७. पत कवर बिसमिल्ला।

५५८. पतरी तिरिअवा कुलवा के हानि, सरबस खा के निरबस बानि।

५५९. पतिबरता कहाँ नइखी, कुटनी से बचें तब त!

५६०. परले राम कुकुर के पाले, धइले पोंछ पटकलस खाले।

५६१. पस्सा बैल हेव के आशा।

५६२. पहिला दिन पहुना, दूसरा दिन ठेहुना, तीसरा दिन केहुना।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

५६३. पहिले खइली घोर-घार, तब खइली पिठुरा, थाली धो के पी लेहली, पेट हो गइल सुसुरा। (पिठुराउसत्तु कड़ा सान कर बनायी गई पिंडी)

५६४. पहिले लिखीं, पीछे दीहीं, घटे त कागज के बाप से लिहीं।

५६५. पांक से पांक ना धोआई।

५६६. पाकल आम के कवन ठीक, कब चू जाई!

५६७. पातर डेहरी अन्न के खैकार। (खैकारउनुकसान, व्यंजना में दुबला-पतला व्यक्ति अधिक अन्न खाता है, किन्तु काम कुछ नहीं करता)

५६८. पातर डेहरी फोंफड़ बाँस, मउगा बेटा कुल के नाश।

५६९. पानी में मछरी, नौ-नौ कुटिया बखरा।

५७०. पाव भर धनिया सहादलपुर कोठी।

५७१. पिआ सराहे त गाछी पर, पंच सराहे त भुइंया।

५७२. पुरबिल्ला के चूक रहे। (पुरबिल्लाउपूर्वजन्म)

५७३. पुरवइया के बहल राँड़ के रोवल, कबहु बाँव ना जाला। (बाँव न जानाउव्यर्थ नहीं जाना)

५७४. पुराना चाउर पंथ परेले।

५७५. पुर्र भाई नाक वाला।

५७६. पूछे ना पाछे, हम दुलहिनिया के मौसी।

५७७. पूत परजा बराबर।

५७८. पूस के दिन फूस, माघ के दिन बाघ।

५७९. पेट करे कुरकुर, जूड़ा करे मँहमँह।

५८०. पेट में रही त गुन करी, बाहर जाई त खून करी।

५८१. पेन्हेला सब कोई, चमकावेला कोई-कोई।

५८२. पैसा त बेसवा भी कमाले।

५८३. फटक के लीं, फटक के दीं।

५८४. फटक गिरधारी, जिनका लोटा न थारी।

५८५. फाटल जामा बाजार में धक्का।

५८६. बइठल ले बेगारी भला।

५८७. बउरहवा के भंइस, गाँव भर धूंचा ले के दउड़े। (धूंचाउ मिट्टी का पात्र , जिसमें दूध दुहा जाता है)

५८८. बकरी कहिया के मरखाह, कोईरी कहिया के सिपाही।

५८९. बकरी के महतारी कब ले खैर मनाई। (खैर मनावल (मु.) उ रक्षा कइल, विपत्ति टालना)

५९०. बकसऽ ए बिलार मुर्गा जीहें त बांड़े रहिहें। (बांड़उबण्ड, स्वतंत्र, अविवाहित)

५९१. बगुला मरले पर हाथ।

५९२. बछवा बैल बहुरिया जोय, ना हर बहे ना खेती होय। (जोयउजनाना, स्त्री)

५९३. बड़ आदमी के चेर बनी, केंगाल के दोस्त ना।

५९४. बड़ से पायीं छेट से ना पायीं।

५९५. बड़-बड़ के टोपी ना, कुत्ता के पैजामा।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

५९६. बड़-बड़ घोड़ी दहाइल जा गदहा पूछे कतेक पानी।

५९७. बड़-बड़ ढोल तहाँ टिमकी के मोल? (टिमकीउछोटा बाद्य यंत्र, तबले का छोटा रूप)

५९८. बड़का खेत में तीन पाव बीआ।

५९९. बढ़े बंस डफालिन होय।

६००. बढ़े बंस पिता के धरमा, खेती उपजे अपना करमा।

६०१. बतिया मानेब बाकिर खूंटवा ओहि जा रही।

६०२. बन में अहीर, नैहर में जोय, जल में केवट, केउ के ना होय।

६०३. बन में बेल पाकल कौआ के कवन काम के ?

६०४. बनल काम में बाधा डालो, कुछ तो पंच दिलायेगा।

६०५. बनला के संघाती सब केउ, बिगड़ला के केहु ना।

६०६. बनले मरद बिगड़ले भक्कू।

६०७. बनिया तउले ना, गंहकी कहे पूरे द।

६०८. बपवा लबरा पुतवा चोर, दूनो परइले देस के ओर।

६०९. बबुआ जनमले खुरपी के बेंट, हाथ गोड डोरा, नादी लेखा पेट।

६१०. बर अच्छा त बरच्छा।

६११. बर के बूंट ना बरिअतिया के मिठाई। (बूंटउदालमोट)

६१२. बरऽ छानऽ सोखा भइंस दीहें। (छानउगाय, भैंस को दुहने के समय उसके पिछले पैर को बान्हने वाली रस्सी, सोखाउओझा, अहीर लोगों के देवता, जिनके आशीर्वाद से भैंस बच्चा देती है)

६१३. बरिया हारे त तूरे, जीते त थूरे।

६१४. बरिया हारे त मुँह में मारे।

६१५. बरियार चोर सेन्ह पर गाजे।

६१६. बलिदान के बकरी के कवन ठीक!

६१७. बवना रे बवना, जोरूके खेलवना। (बवनाउबौना/ठिंगना)

६१८. बहनी ना बाटा, अइले गेठर काटा। (गेठरकट्टा (मु.) उ उधरिया)

६१९. बहरा लम्बी-लम्बी धोती, घरे अंठुली के रोटी।

६२०. बहिर कुत्ता बतासे धावे, न एहर पावे ना ओहर पावे। (बतासे उ हवा की आहट पर)

६२१. बहिला गाय दुआर के सोभा। (बहिलाउ बिना ब्याई)

६२२. बहुत गया, थोड़ा है बाकी, अब मत हाथ बिगाड़ो साथी।

६२३. बहे हर ना बहे कुदारी, अमृत भोजन देहिं मुरारी।

६२४. बांझ का जाने परसौती के पीड़ा। (परसौतीउप्रसव)

६२५. बांस आ सुअर कटला पर बुझाले।

६२६. बांस के जरी बांसे होई।

६२७. बाग में जाईं ना, पाँच आम रोज खाईं।

६२८. बाजऽ हे बाजन बाजऽ, दुस्मन के घर बाजऽ।

६२९. बाणी गवरैया बांझ से नजारा।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

६३०. बात करीं केवल, भतार लागस चाहे देवर।

६३१. बात बिगाड़े तीन, अगर, मगर, लेकिन।

६३२. बानर के हाथ में नरियर।

६३३. बानर जनिहें आदी के सवाद!

६३४. बाप कूली बेटा साहेब।

६३५. बाप के गर में मुँअड़ी, बेटा के गर में स्दराछ।

६३६. बाप के तीकी ना बेटा के जुलफी। (तीकीउ चिरकी)

६३७. बाप के नाम साग-पात बेटा के नाम परौर।

६३८. बाप दादा न खइले पान, दाँत बिदोरले गइल परान।

६३९. बाप न झुलले मातारी ना झुलली, हमहीं झुललीं सरधा बुतवलीं।

६४०. बाप बड़ा न भैया सबसे बड़ा रुपैया।

६४१. बाप बेटा बरतिया, माई-बेटी गीतहारिन।

६४२. बाबा के बेहीं तर बेटी उपास, करऽ बेटी करम के आस।

६४३. बाबा जी के दाना हक लगाके खाना।

६४४. बाबा जी जिअलो पर खाले, मरलो पर खाले।

६४५. बाभन कुत्ता हाथी, तीनो जात के घाती।

६४६. बाभन खिअवले, बाबू कहवले, कायथ थम्हवले। (इससे ये प्रसन्न होते हैं)

६४७. बाभन चले कइसे, कटहर फरे जइसे।

६४८. बाभन जात अन्हरिया रात एक मूठी चिउरा भर धउरल जास।

६४९. बाभन नाचे कोइरी देखे।

६५०. बाभन, बरखा, बाढ़, बेयार, दखिना पइले, भइले फरार। (दखिना उ दक्षिणा, दखिनी हवा)

६५१. बार उखड़े ना बरियार खाँ नाम।

६५२. बारह बरिस तप कइली, जोलहा भतार मिलल।

६५३. बारी के बारी कोलवांसी।

६५४. बारी समइया पिया खोर-खोर खइले, मरे के बेरा बउखा गर्हवले। (बउखाउएक प्रकार का आभूषण)

६५५. बावन बीरवा हार गइले, बाकी बाड़े चमसुर।

६५६. बावाजी के मुखे दुआर।

६५७. बिअवा के धनवा कूट-कूट खइली, बोये के बेरा नइहर गइली।

६५८. बिगड़ला के बहनोई केहूना, बनला के सार सब कोई।

६५९. बिटिया गिहथिन कि केंटिया गिहथिन।

६६०. बिन जोलहे ईद।

६६१. बिना मन के बिआह कनपटी पर सेनुर।

६६२. बिना मेंह के दौनी।

६६३. बिनु घरनी घर भूत के डेरा।

६६४. बिलाई के पेट में घी पची ?

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

६६५. बिलाई के भागे सिकहर टूटल।

६६६. बिलार भइली मुखिया, गीदड़ करमचारी।

६६७. बीन के हाल गोबिन्द जानेले।

६६८. बुढ़वा भतार पर पाँच टिकुली।

६६९. बुरबक सरहले।

६७०. बूझ गइले, बूझ गइले, 'का' ? त, मतंगवा भइंसा।

६७१. बूढ़ बकरी बगैचा चरे।

६७२. बूढ़ भइली दूर गइली।

६७३. बूढ़ सूगा पोस मानी ?

६७४. बे बोलावे के बोले! त बर के मउसी।

६७५. बेटओ मीठ भतरो मीठ, किरिया केकर लगाके खाई ?

६७६. बेटा भइल जवान, त कोठी में लागल पेहान। (पेहानउढक्कन)

६७७. बेटा मरल अच्छा साख मरल ना अच्छा।

६७८. बेटा मांगे गइली भतार गंवा के अइली।

६७९. बेटी के मैया रानी, बूढ़ी समैया भरेली पानी।

६८०. बेटी चमार के नाम राजारनिया।

६८१. बेटी बिअहली कुइयां उड़हली।

६८२. बेल तर के मारल बबूर तर।

६८३. बेसवा रखे धरम बचे।

६८४. बैद-बैद-बैद, दूनो आँख के भड़कौना बैद।

६८५. भंसार घर दबिला मजा करी। (भंसारउभंड़सार, दबिलाउगंड़ासी की तरह का एक हथियार)

६८६. भइल बिआह मोर करबे का?

६८७. भउजाई के बढ़निये में लछन। (बढ़नी - कूंची, झाड़ू)

६८८. भक्ति नाहीं भाव नाहीं, नेह नाहीं माया में, अढाई सेर ठूँस के सुत गइले धरमसाला में।

६८९. भतार के कमाई बाजार में गवइली, बेटा के कमाई बंक में।

६९०. भर गाँव से बतिआ आवस, मालिक से मुँह लुकावस।

६९१. भर मत करिहऽ भूमिहार के, पोंछ जनि धरिहऽ सियार के। (भरउ विश्वास)

६९२. भर, भुईंहार, अहीर ये माना, पोस न माने तीनो जाना।

६९३. भरा भूत ओखेले।

६९४. भरी हाथ चूरी ना त पट से रांड़।

६९५. भल भुइंहार के कहल मत करिहऽ, चिरकी उखाड़ के जेंवर बरिहऽ।

६९६. भल सैंया रहले त लुगरिये पर लुभास।

६९७. भला कुल के बेटी बाड़ू, भला कुल के नारि। अगिला चार उजरले बाड़ी, पिछला में लगवली हाथ। (चारउफूस के घर का छप्पर)

६९८. भला संग बसिहऽ खइहऽ बीड़ा पान, बुरा संग बसिहऽ कटइह दूनो कान। (कान कटाना उइज्जत गंवाना)

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

६९९. भाई के भात ना हजाम के पक्की।

७००. भाई-बहिनी आन के, जोहिया परान के। (जोहियाउजोड़ू, मरद)

७०१. भाग बुरी बौना, बिआह में खिअवले, अब बाकी बा गवना!

७०२. भाजा खाये के मन, तेल काहे कम।

७०३. भादो भंइसा चइत चमार। (मस्त रहते हैं)

७०४. भारी रहे भार से पतुकी भड़ाक से।

७०५. भुइंहार के अंतरी उनचास हाथ।

७०६. भुइंहार भगत ना बेसवा सती, सोनार सांच ना एको रती।

७०७. भुखले लइका गूलर खाले।

७०८. भूख त छूंछ का, नींद त सेज का!

७०९. भूखा के दीं अघाइल के ना।

७१०. भूल गइल भाव-भजन, भूल गइल फकरी, तीन चीज जायज रहे, नून तेल लकरी।

७११. भूसा के उधिआइल, बड़का के खिसिआइल ना बुझाला।

७१२. भेखे भीख मिलेला।

७१३. भोग माई आपन कमाई।

७१४. भोज त ओज का, ओज त भोज का?

७१५. भोथर चटिया के बस्ता मोट। (चटियाउविधार्थी)

७१६. भोथरो हंसुआ अपने ओर खींचेला।

७१७. भोदू भाव ना जाने, पेट भरे से काम।

७१८. मइल लूगा, दूबर देह कुकुर काटे कवन सनेह।

७१९. मउगा मरद कलटर से इयारी।

७२०. मउगी भतार के झगरा, बीच में बोले से लबरा।

७२१. मकई सूखल, राजपूत भूखल।

७२२. मछरी खा के बकुलवा ध्यान।

७२३. मड़हा मरद चउरई जोय, सेकरा घरे बरक्कत ना होय। (मंड़हाउमांड पीने वाला, चउरहीउचावल खाने वाली)

७२४. मन करे पहिनीं चउतार, विधना लिखले भेड़ी के बार। (चउतारउबारीक ऊन का कम्बल)

७२५. मन चंगा त कठौती में गंगा।

७२६. मन माने त चेला, ना त सबसे भला अकेला।

७२७. मन में रहल से ना भइल, पंच मिल भकोसीं। (भकोसींउभक्षण करीं)

७२८. मन मोर चंचल जिअरा उदास, मन मोर बसेला इयार जी के पास।

७२९. मन हुलसे त गाईं गीत, भादो में उठाईं भीत। (हुलास ऊउल्लास)

७३०. मर गइल त का हऽ, बिदा करऽ।

७३१. मर जाई जीव, त के खाई घीव।

७३२. मरजी गोबिन्द के केराव फरे भेली। (केरावउमटर)

७३३. मरद के घोड़ा के घास काटीं, निमरद के घोड़ा पर मत चढ़ीं।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

७३४. मरद मुये नाम के, निमरद मुये पेट के।

७३५. मरना है काशी तो खुशामद किसका?

७३६. मल बटुली खो भात सोरे दूनी आठ।

७३७. महतारी के कोख, कोंहार के आँवा।

७३८. महराज जी हउअऽ त कोख में मरबऽ?

७३९. मांगे के भीख पादे के बीख। (बीख पादना (मु.) उ क्रोध में बात करना, ऐंठ कर बोलना)

७४०. मांगे के भीख पूछे के गांव के जामा! (जामाउपूंजी, सम्पदा)

७४१. मांड़ घोटाव ना पीठा ढकेल। (पीठाउदाल-पीठा, आटे की लोई दाल में पकाया हुआ)

७४२. मांड़ जूरे ना, ताड़ी पर आसा।

७४३. माई करे कुटवन-पिसवन, बेटा दुर्गादत्त।

७४४. माई बेटी एके मती हमही उलदिया, हमरा के देखी के लुकइले रे उलदिया। (उलदिया उअधिक, उलद ऊउत्था उ विपरीत)

७४५. माघ बरखल चाहे, भाई जुदा भइल चाहे।

७४६. माछी मारा पोंछ उखाड़ा, चींउटा से रणजीता, मैं तो बहुत वीर मजबूता।

७४७. माटी के देवता तिलके में ओरा गइले। (ओरा जानाउ समाप्त होना)

७४८. माथ ना बन्हवली, पिअवा के मन रखली।

७४९. माथ पर मोटरी बहोर भइया, घर-घर पूछे मटकोर कहिया। (बहोरना उ निकलना, घर से बाहर होना)

७५०. माथ में लगावे के तेल ना पुआ पकावे के साध।

७५१. मामा हित मामी मुँह मरावन।

७५२. माय गुन बछरी पिता गुन घोर, ना अधिक त थोरे-थोर।

७५३. मायभा-मातारी खुश भइली, त कहली-'ए बाबू !लिटिया में तनी छेद करऽ, तहरा के माठा दीं।

७५४. मार के टर जाईं, खा के पड़ जाईं।

७५५. मारे गइले मेहरी, ठेठावे लगले डेहरी।

७५६. मारे मेहर पादे पड़ोसन।

७५७. मारेला भतार, हँसेला संसार, कहीं छूटे ना भतार।

७५८. मालिक कइलऽ सुख सोवे के, कि पटिया ध के रोवे के। (मालिक करना (मु.) उ आश्रित होना, अभिभावक बनाना)

७५९. मालिक मालिक एके।

७६०. मीठो चाहीं, भर कठौती चाहीं।

७६१. मुँह एहिसन मुँह ना, मुँह तिनकोना।

७६२. मुँह के बाफ ना रोकाला, हाँड़ी के बाफ रोका जाला। (बाफउ वाष्प)

७६३. मुँह बाछी के पेट हाथी के।

७६४. मुँह में दाँत ना चाउर-चिउरा से मस्का।

७६५. मुँह ना धोवे से ओझा कहावे।

७६६. मुँह सैंया की ओर, गोड़ गोसैंया की ओर।

७६७. मुँह हइये ना बेल लील लिहले।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

७६८. मुठियक दाल में घुठियक पानी। (घुटने भर, व्यंजना में बहुत अधिक पानी)

७६९. मुरदा पर जइसे पाँच मन माटी, ओहिसे एक मन अउर।

७७०. मुर्गी बोललस भइल बिहान, उठऽ हे जजिमान। (मुर्गा बोलना (मु.) उ सुबह का संकेत)

७७१. मूलधन, आनधन, आधाधन गहना, कपड़ा लाता टीम-टाम झांट धन लहना। (लहनाउबकाया किस्त)

७७२. मूस गइल बिअल में धसन ठेठा के का होई! (धसनउबिल का ऊपरी भाग)

७७३. मूस मोटइले लोढ़ा भइले। (लोढ़ाउमोटाकर लोढ़ा हो जाना)

७७४. मेंह के बल पर घारे के बैल फेंउकेला। (घारेउ किनारे, फेंउकनाउ घमण्ड में चूर, ऐंठ)

७७५. मैं मर जइबो टका ना बिकइबो, टकवा देखि-देखि जीअरा बुझइबो। (जीअरा बुझावल (मु.) उ मन को तसल्ली देना, संतोष करना, प्रसन्न होना)

७७६. मैं रानी, तें रानी, के भरी डोला के पानी?

७७७. मैं लरकोरिया, तू अलवात, दूनो जगतिया एके में बान्ह।

७७८. मैं सुनरी, पिया सुनरी, गाँव के लोग बनरा-बनरी।

७७९. मोंछ पर ताव झगरुवा नाव। (मोंछ पर ताव (मु.) उ शान)

७८०. मोर पिया बात ना पूछे, मोर सोहागिन नाव।

७८१. मोर भूख मोर माई जानेले, कठौती भर पिसान साने ले।

७८२. रुप रोवे भाग हँसे। (रूपवान होकर भी भिखमंगई)

७८३. रकटला के सइंया, बिहान जनि होखे दीहऽ ए गोसैंया। (रकटनाउमिलने पर भी लालायित, दरिद्र स्वभाव का)

७८४. रसोइया एक जानी, गाजिर-बिजिर दू जानी, बजर परे त तीन जानी।

७८५. रहल त मनही ना भावल, चल गइल त मन पछ्ताइल।

७८६. रहल बुढ़िया भइल काल, मरल बुढ़िया भइल अकाल। (काल होना (मु.) उ विपत्ति का घर, जिसको हटाने-हटाने का मन करे)

७८७. रहला पर के दानी, भादो में कहाँ ना पानी?

७८८. रहली इनिया बिनिया भइली गाँव के महतिनिया। (महतिनियाउमुख्तार, प्रधान)

७८९. रहली कोइरी के घरे, परली राजा के घरे, पूछली-'बैगन के जर केइसन ह' ?

७९०. रहली तीन जानी, पदली कवन जानी ?

७९१. रही जीव त खाई घीव।

७९२. राजा के ओढ़ना रानी के बइठना।

७९३. राजा के बेटा, हुमेले के नाती, नौ सेर कपड़ा के बान्हें ले गांती।

७९४. राजा दुखिया, परजा दुखिया, जोगी के दुःख दूना दुःख।

७९५. राजा मरे इन्द्र घर पावे।

७९६. राजावा के घर मोतिये के दुःख !

७९७. राजावा के राज भइल बनरा के तिलक चढ़ल।

७९८. रात अंधरिया पंथ ना सूझे, खाल ऊँच बराबर बूझे।

७९९. रात भर बहुरिया चाँचर खेलस, दिन में कौआ देख डेरास।

८००. राम के नाम परात के बेरा। (परातउप्रात ऊप्रातः)

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

८०१. राम जी के चिरई राम जी के खेत, खाले चिरई भर-भर पेट।

८०२. राम जी के माया कहीं धूप कहीं छाया।

८०३. राम भरोसे राम लीला पाठी।

८०४. राम से गुजर ना त गुलाम से?

८०५. राम-राम कहत रहऽ मड़ई में परल रहऽ।

८०६. राह बतावे से आगे चले।

८०७. रेंग-रेंग-रेंग, तोरा खपरी में बेंग।

८०८. लंका में सब उनचासे हाथ।

८०९. लंगा से खुदा हारे।

८१०. लंगा से दूर भला।

८११. लंगा से लंगा लागे, तब फरिआला।

८१२. लइका के रोग भइल दूध बढ़िया गइल।

८१३. लइका भइल हल्ला भइल, सबेरे देखीं त बाबू के जूँजिये ना।

८१४. लइका मालिक, बूढ़ देवान, मामला बिगड़े साँझ-बिहान।

८१५. लउका पर सितुहा चोख।

८१६. लउटल भाग भइली लरकोरी, नित उठ दूध भर-भर खोरी।

८१७. लकड़ी छिलले चिकन, बात छिलले खखड़। (बात छिलनाउबतकूचन करना, विवाद करना)

८१८. लछमी आवेली त छप्पर फार के।

८१९. लछमी के आइल कहीं, ना गइल कहीं।

८२०. लड्डू लड़ी त झिल्ली झरी।

८२१. लड़ पड़ोसिन दीदा रात।

८२२. लबरो के लइका भइल, उधापति नाम पड़ल।

८२३. ललका चिउरवा, करिअवा गूड़, पेट के जरले लिहले हूर।

८२४. लागी से दिआई, बाकिर बाजी रोशन चउकी। (रोशन चाउकीउएक प्रकार का बाजा)

८२५. लागे के बले, भागे के डरे।

८२६. लाजू मरस लाज ला, पेटू मरस पेट ला।

८२७. लाजू मरस, ढीठू जीअस।

८२८. लाजे बहुरिया कोवा ना खइली, कमरी ले पिछुआरा गइली। (कमरीउपके कटहल का खोल)

८२९. लाजे भवे बोलस ना, सवादे भसुर छोड़स ना।

८३०. लाठी के हाथे राउत बेवात। (बेवातउबिना बात के झगड़े के लिए तैयार)

८३१. लात के आदमी बात से ना माने।

८३२. लादल बैला लादल जाय, छुँछका बैला कोंहरत जाय।

८३३. लाल मरिचइया तितइया बा ओतने, बूढ़ बानी तबो कुटइया करेब ओतने।

८३४. लाल-लाल पइसा त रुदना कैसा ?

८३५. लालची गइले खुशामद करे, परलोको के हानि भइल।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

८३६. लालू के धन जगधर बेवहरिया।

८३७. लाह करीं पिया तोरा पर, पोंटा पोंछी तोरा गोंछा पर। (लाहउ स्नेह)

८३८. लिहीं तेकर दिहीं ना, खाईं सेकर गाईं ना।

८३९. लुसुर-फुसुर करे जसिया के जीव, कब जायब ससुरा चाटेब घीव।

८४०. लूगा आ झूला सलूका चाहीं, जोसन ना बाजू भभूटा चाही। (सलूकाउचोली; जोसन, बाजू, भभूटाउ स्त्रियों के आभूषण)

८४१. लूट में चरखा नफा।

८४२. लूट ला कूट खाव।

८४३. ले दही, दे दही।

८४४. ले लुगरिया चल डुमरिया।

८४५. लोकनी पूछे ना, कनिया हकन करे।

८४६. लोटवे ना त पेटवे।

८४७. लोभी के घर ठग उपास ना करे।

८४८. लोहा के कल में रेंड़ के पचरी। (कलउमशीन, रेंडउरेंड़ी, इस बीज से ड़ङ्कद्मद्यड्ढ दृत्थ् बनता है, इसके पौधे की लकड़ी कमजोर होती है)

८४९. वजन में बड़हर से कटहर बड़ा।

८५०. संगही पिया परिचय नाहीं।

८५१. संदेसे देही ना जामे।

८५२. संवसे गांव में एगो ओझा।

८५३. सइंया से साँस ना देवर मारस मटकी। (साँसउफुरसत, मटकी मारनाउनजर मारना, आँख मारना)

८५४. सकता बाभन ना भला, बैष्णो भला चमार। (सकताउअसभ्य)

८५५. सकल चुड़इल के, मजमून परी के।

८५६. सजनी के धन भइल, तर ऊपर मन भइल।

८५७. सती के रोवले देव रोवे।

८५८. सब कुकुर कासी जइहें त पतलवा के चाटी ?

८५९. सब कोई दढ़िवाले बा, चूल्हा के फूंको!

८६०. सब गुन के आगर धिया नाक के बहेंगवा।

८६१. सब चिरैया झूमर पारे लंगड़ा हुचुक।

८६२. सब जगह नीच गोतिया से बरोबरी।

८६३. सब दिन सेवले कासी, मरे के बेरा उसर-बासी। (उसर-बासीउबेचैनी, व्यग्रता, परेशानी)

८६४. सब धन सुकुल के, सुकुल के मोल कुकुर के।

८६५. सब रमायन बीत गइल, सियाजी के बिआह कब भइल, पते ना।

८६६. सबके दुलार महतारी के हँकार।

८६७. सर गल जइहें, गोतिया ना खइहें, गोतिया के खाए से, अकारथ जइहें। (अकारथउव्यर्थ)

८६८. सरल गाय बाभन के दान।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

८६९. सरसो गिरहस्थ के निहाल भइले तेली।

८७०. सरसो तरहथी पर, पेरऽ तेल, तब देखऽ जवानी के खेल।

८७१. सराहल बहुरिया डोम घरे जाली।

८७२. सहर में गाली, गली में माँफी।

८७३. सहर सिखावे कोतवाल।

८७४. साँच के सोर पाताल में ।

८७५. साँच में आँच का?

८७६. साँझे गइली पराते अइली।

८७७. साँप ना खोने बिअल, कोइरी ना बसे दीअर।

८७८. साठा त पाठा।

८७९. सात बेर सतुअन, भतार के आगे दतुअन।

८८०. सात भतार सतबरता एक कइली गंड़गहता। (भतारउभर्तार, पति, सतबरताउसत्यती सती, जिसने सात भर्तार किया वह स्वयं को सती बताती है और एक भर्तार करने वाली को कुलच्छनी कहती है, गुड़गहताउकुलच्छनी)

८८१. सात मूस खा के बिलाई भइली भगतिन।

८८२. सात सेर के सात पकवली, चौदह सेर के एके, तू दहिजरु सातो खइलऽ, हम कुलवंती एके। (दहिजरु ऊ देह अ जरु उ भूखा)

८८३. सातू के पेट सोहारी से भरी? (सोहारीउहल्का जलपान)

८८४. सादी करीं जान के, पानी पीहीं छान के।

८८५. साधु-सजन के फुटहा दुलम बेसवा फारे सारी। (दुलमउदुर्लभ)

८८६. साल के दूसाल बांस कटाले।

८८७. साव सधे दूना लाभ।

८८८. सावन भादो से दूबर?

८८९. सावाँ सोहले मूर्ख सरहले। (साँवाउएक प्रकार का अन्न, फसल)

८९०. सास किछु बोलिहें त घींच मारेब मूसर।

८९१. सास के डरे जुदा भइली, ननद परली बखरा।

८९२. सास ना ननद, घर आनंदे-आनन्द।

८९३. सास बाड़ी कूटत, पतोह बाड़ी सूतल।

८९४. सास भइली परसन्न त कोनाई के लगवली लिट्टी। (कोनाईउभूसी)

८९५. सास मांगस पानी, ढकेल द रुखानी। (रुखानी उ कटुबचन, बढ़ई का एक औजार, जिससे लकड़ी पर महीन सफाई का काम अथवा पौवा में छेद किया जाता है)

८९६. सास सठिहें त करिहें का? लुगरी छोड़ पहिरहिहें का?

८९७. सासु से टेढ़ी पगहिया से मेरी। (पगहिया उ पग चलने वाला, राही, मेरी उ मेल)

८९८. सियरा के मन बसे केंकरी के खेत में।

८९९. सीता के दिन वियोग में ही बीत गइल।

९००. सील के लोर्हा करे बड़ाई हमहुँ शंभुनाथ के भाई।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

९०१. सुअर के बिस्टा, निपे के ना पोते के।

९०२. सुकुवार बहुरिया के माझा ढील। (माझाउजांघ)

९०३. सुखला सावन भरला भादो।

९०४. सुघा के मुँह कुत्ता चाटे।

९०५. सुधा बहुरिया के घूंघ तर साँप बिआले। (साँप बिआनाउजहर पिनाक होना)

९०६. सुन ए माटी के लोला, कायथ, सोनार कहीं भगत होला?

९०७. सुनते साख ना पूछल जाला।

९०८. सुरहा ताल के मछरी, तिनफेड़िया के आम, पकड़ी तर के बइठल, छोड़ देहले राम।

९०९. सूई ना समाय तहाँ फार घुसिआय।

९१०. सूद के पैसा दोबर ना त गोबर।

९११. सूप के पिटला से ऊँट भागी?

९१२. सेमर के फूल देखि सुगना लपटइले, मरले ठोर भुआ उड़ि गइले, सुगना हो! इ मन पछतइले।

९१३. सेर जागे, सवैया जागे छटंकी के छटपटी बरे। (छटंकीउछोटा लड़का)

९१४. सेर मरद पसेरी बरद।

९१५. सेराइल बा सथाइल बा, बखरवो कहीं जाई!

९१६. सोना सोनार के सोभा संसार के।

९१७. सोम्ह आ दानी के खरचा बराबर।

९१८. सोम्ह के धन सैतान के नेवान। (नेवानउउपभोग)

९१९. सोरहो सिंगार घेघवे बिगाड़।

९२०. सौ घर कसाई, उहाँ एगो बाबाजी के का बसाई।

९२१. सौ चोट सोनार के एक चोट लोहार के।

९२२. सौ दवा एक संयम।

९२३. सौ में सूर हजार में काना, सवा लाख में ऐंचां ताना, ऐंचा ताना कहे पुकार, कोइंसा से रहियो होंसियार। (तानाउकनडेर, कोइंसाउभूरा आँख वाला)

९२४. सौती के टीस कठौती पर।

९२५. हँस के बोले नारी, सारा काम बिगाड़ी।

९२६. हँस के मांगे दाम, तीनो काम नकाम।

९२७. हँसल घर ही बसेला।

९२८. हँसुआ के बिआह में खुरपी के गीत।

९२९. हंस के मंत्री कउआ।

९३०. हजाम के बरिआत ठाकुरे-ठाकुर।

९३१. हटिया के चाउर, बटिया के पानी, बइठल रिन्हेली मदोदर रानी।

९३२. हटिया के चाउर, बटिया के दाल।

९३३. हड़बड़ी के बिआह कनपटी पर सेनुर।

९३४. हत्या के भरोसे बाछी फोद काढ़ेले।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

९३५. हम अइनी तोहे आपन जान, तें सुतले कमरी तान।

९३६. हम खेलीं आन से सइंया विरान से, कुकुर लौंडू खेले गइले जव के पिसान से।

९३७. हमरा भरोसे रहिह ना, अपना घरे खइह ना।

९३८. हमार एक आँख, गोतिया के दूनो आँख चल जाव मंजूर।

९३९. हमार नकिया छूँछे जाला ए विसंभर भइया, तोहार लोलवा ए तेजनो। (लोलवा उ मुँहफट्ट, तेजनो(नाम), व्यंजना - तेजी दिखाने वाली)

९४०. हर कुदार नेग चार, अमृत बसे खुरपी के धार।

९४१. हर के मारल हेंगा विश्राम।

९४२. हर टूटे घर भरे, पालो टूटे बजर परे।

९४३. हर द हरवाह द आंड़ खोदे के पैना दऽ।

९४४. हर ना फार लबर-लबर हेंगा। (लबर-लबरउबार-बार)

९४५. हर बहे से खर खाय, बकरी अंचार खाय।

९४६. हर हेंगा में कोढ़िया पगुरी में रंग। (हर हेंगा में कोढ़ियाउ आलसी, पगुरीउपागुर, खाने में बहादुर)

९४७. हरवाह चरवाह के इनार के पानी।

९४८. हरवाही में हरिनाम।

९४९. हरही के पेट में सोरही।(हरही उ दूबली-पतली, सोरही उ सोलह रोटी)

९५०. हरिजन चारु बरन में ऊँचा।

९५१. हरी घास बकरी से इयारी।

९५२. हाँके भीम भए चौगूना।

९५३. हाकिम के हुकुम, नौकर के चाकर।

९५४. हाथ अगरबत्ती, गोड मोमबत्ती।

९५५. हाथ के मुसरी बिअल में गइल, बिअल कोड़न लागल।

९५६. हाथ गोड़ समतूला, आनकर रोटी बीख के मूला। (आनकरउदूसरे का)

९५७. हाथ पर पवली, पात पर चटली। (भुक्कड़, अधीरजी, जिसको धैर्य न हो)

९५८. हाथ में ना गोड में टकहा लिलार में। (टकहाउटिकुला)

९५९. हाथी अइलस हाथी, हाथी पदलख टीं।

९६०. हाथी के लिंग पर रुई के फाहा।

९६१. हाथी के हउदा ना, बकरी के ओहार। (ओहारउपर्दा)

९६२. हाथी चोरावल, खाला-खाला गइल। (खाला-खालाउनीचे-नीचे,गड़हा के रास्ते)

९६३. हाथी से हथखेल?

९६४. हित कुटुम अइले-गइले।

९६५. हे धिया! दमदो नसलू!

९६६. हे रमजानी, सतुआ सानीं, पेट चली त हम ना जानीं। (पेट चलनाउपेटझरी)

९६७. हेल बांडा पोंछ अलगवले।

९६८. होत परात किरिया लेब, कारी भइंस अहीर के देब।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

९६९. होसियार के सउदा मन ही मन।

९७०. होसियार लइका हगते चिन्हाला।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.